3- आक्रमणात्मक कार्यवाही (Offensive Action)- फ्रुन्ज (Frunze) नामक प्रसिद्ध रूसी सैनिक विशेषज्ञ का कथन है कि- "विजेता वही हो सकता है, जो आक्रमण का दृढ निश्चय रखता है। वह पक्ष जो केवल अपनी ही रक्षा करता है, अवश्य ही पराजित होगा।" युद्ध में अन्तिम विजय केवल आक्रमणात्मक कार्य द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। हमें युद्ध के इतिहास में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा कि युद्ध में विजय केवल प्रतिरक्षात्मक (Defensive Action) कार्यों के द्वारा प्राप्त हुई हो। इसके बारे में प्रसिद्ध चीनी सैन्य विचारक सुन-त्जु (Sun-tzu) ने ठीक ही कहा है कि- "शत्रु को पराजित करने के लिए आक्रमणात्मक नीति का प्रयोग करना आवश्यक है।" इस सिद्धान्त का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि सेनानायक या सेना चाहे किसी भी जटिल परिस्थिति में हो उसे सदैव आक्रमणात्मक कार्यवाही ही करनी चाहिए बल्कि प्रतिकूल परिस्थिति के पैदा हो जाने पर सेनानायक को प्रतिरक्षात्मक स्थिति अपना लेनी चाहिए, तो भी अवसर मिलते ही उस पर आक्रमण अवश्य करना पड़ेगा क्योंकि बिना आक्रमण के द्वारा पराजित किये कोई सेना आत्मसमर्पण नहीं कर सकती। इसी बारे में सैन्य विचारक क्लाज विट्ज (Clause Witz) ने कहा है कि- "हमें प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही तब तक ही करते रहना चाहिए जब तक हम शत्रु के मुकाबले में कमजोर हैं।" इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही द्वारा हार से बचा जा सकता है, लेकिन इस कार्यवाही द्वारा विजय प्राप्त नहीं किया जा सकता। अगर अपनी स्थिति शत्रु पक्ष की अपेक्षा कमजोर हो तब प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही को अपनाया जाना चाहिए। युद्ध में ऐसी परिस्थितियाँ पैदा होती रहती हैं जिनके कारण कोई भी राष्ट्र आक्रमणात्मक तथा सुरक्षात्मक कार्यवाही करने के लिए बाध्य हो जाता है लेकिन तब भी युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए आक्रमणात्मक कार्यवाही को निश्चित रूप से अपनाना पड़ेगा। इसीलिए हम कह सकते हैं कि प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही की अपेक्षा आक्रमणात्मक कार्यवाही के द्वारा सफलता अधिक सम्भव है। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रतिरक्षात्मक स्थिति कभी नहीं अपनानी चाहिए, अपितु यह है कि केवल प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही से ही युद्ध में अन्तिम विजय प्राप्त नहीं की जा सकती।

उदाहरण (1) सेलम के संग्राम में सिकन्दर ने सर्वप्रथम आक्रमणात्मक कार्यवाही की जो उसकी विजय का एक प्रमुख कारण रही।

2. तराइन के द्वितीय संग्राम में मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच जो युद्ध हुआ उसमें मुहम्मद गोरी ने आक्रमणात्मक कार्यवाही की पहल की थी जिससे पृथ्वीराज की सेना अचानक आक्रमण से चकित हो गयी थी फलतः मुहम्मद गोरी विजयी हुआ।

3. 1971 के भारत-पाक युद्ध में भी भारत की दूरदर्शिता के साथ भारतीय सेना द्वारा जल, थल, नभ तीनों क्षेत्रों में सफल आक्रमणात्मक कार्यवाही की गयी, जिससे भारत को अद्वितीय सफलता मिली।

4. आश्चर्य अथवा चकमा (विस्मय) (Surprise)- "किसी विशेष समय तथा स्थान पर शत्रु पर ऐसा आक्रमण किया जाय जिसकी शत्रु को आशा न हो या जिसके लिए शत्रु तैयार

न हो, ऐसे अप्रत्याशित आक्रमण से शत्रु आश्चर्य-चकित हो जाता है। आश्चर्य चकित होने से शत्रु का मनोबल गिर जाता है और उसमें घबराहट फैल जाती है।"

जनरल फुलर ने लिखा है कि - "सैनिक कार्यवाहियों की जान तथा विजय का रहस्य और सफलता की कुंजी विस्मय है।"

इसी सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए आज से 2500 वर्ष पूर्व प्रसिद्ध चीनी सैन्य विचारक सुन्तजू ने कहा था कि - "सभी यौद्धिक क्रियाएं धोखा देने पर ही आधारित होती है।"

किसी भी युद्ध संक्रिया में अगर सबसे अधिक महत्वपूर्ण कोई तत्व होता है तो वह है आश्चर्य चकित करना। इसके अन्तर्गत शत्रु पर पूर्व निर्धारित समय तथा स्थान पर ऐसा आक्रमण किया जाता है जिसके लिए शत्रु पक्ष बिल्कुल भी तैयार नहीं रहता। इस आक्रमण से वह आश्चर्य चकित हो जाता है। वह अपना मानसिक तथा भौतिक सन्तुलन भी खो बैठता है और घबराकर बिना सोचे-समझे योजनाओं को लागू करना चाहता है फलतः उसे पराजय ही हाथ लगती है। जनरल डी० के० पालित ने इसकी व्याख्या निम्न प्रकार से की है - "अपनी इच्छा से चुने हुए स्थान एवं समय पर एक ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जाती है, जिससे शत्रु की योजनाएं बेकार हो जाती है और वह जल्दी से बिना सोचे-समझे हमारा सामना करने के लिए विवश हो जाते हैं" क्लाज विट्ज ने भी कहा है कि — "तमाम सैनिक सफलताओं की नीव आश्चर्य ही है।" आधुनिक युद्धों में तीन क्षेत्रों में शत्रु को चकित किया जा सकता है।

(A) <u>रणनीतिक क्षेत्र में आश्चर्य</u>:- युद्ध की असली कार्यवाहियों का क्षेत्र अर्थात युद्ध स्थल को जहां तक हो सके गुप्त रखने का प्रयत्न करना चाहिए, इससे यह लाभ होता है कि शत्रु अपनी शक्ति को ठीक स्थान पर केन्द्रित नहीं कर सकता। वर्तमान युद्ध में बहुत बड़ी सेनाओं के प्रयोग होने के कारण अपनी तैयारियों को शत्रु से छिपाये रखना बहुत कठीन हो जाता है क्योंकि शत्रु हवाई अड्डे तक ही नहीं अपितु अन्तरिक्ष तक बोट लगाता है। अपनी तैयारियों को छिपाये रखना बहुत कठिन अवश्य है, परन्तु असम्भव नहीं। संग्राम प्रारम्भ होने से पहले अनेक देशों से अपना मधुर सम्बन्ध भी युद्ध में आश्चर्य का काम कर सकते हैं। शत्रु को प्राप्त होने वाली सैन्य सामग्री रसद तथा उसके आवागमन के मार्गों की युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही जानकारी प्राप्त करके युद्ध के समय शत्रु को आश्चर्य-चकित किया जा सकता है।

(B) <u>समर तांत्रिक आश्चर्य</u>:- आक्रमण के लिए ऐसा समय व स्थान चुनने से जिसकी शत्रु को आशा भी न हो, सामरिक आश्चर्य प्राप्त किया जा सकता है। नवीन सामरिक विधियों का प्रयोग कर भी आश्चर्य प्राप्त करने के लिए छिपाव आदि का अच्छा प्रबन्ध होना आवश्यक है। शत्रु को धोखे में डालने का प्रयत्न होना चाहिए।

(C) <u>प्राविधिक (तकनीकी) क्षेत्र में आश्चर्य</u>:- ऐसे शस्त्रों का प्रयोग करने से जिनके विषय में शत्रु को पहले से जानकारी न हो प्राविधिक आश्चर्य प्राप्त किया जा सकता है। जैसा की द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के समय जापान के दो महानगरों 'हिरोशिमा' और 'नागासाकी' पर बम डालकर अमेरिका ने जापान को आश्चर्य-चकित कर आत्मसमर्पण के लिए बाध्य करने में सफल हुआ था।

इस सिद्धान्तों को निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है -

<u>उदाहरण (1)</u> - झेलम के संग्राम में सिकन्दर ने चुपके से नदी पार करके पोरस को चकित कर दिया, जबकि पोरस यह समझता था कि वर्षा के कारण नदी में आयी हुई बाढ़ के समय सिकन्दर का नदी पार करना असम्भव है।

2:- तराइन के द्वितीय संग्राम में कूटनीतिक चालों का सहारा लेते हुए मुहम्मद गौरी द्वारा पृथ्वीराज से प्राप्त सन्देशों के जवाब में यह सूचना भेजवाया की मैं सन्धि प्रस्ताव से सहमत हूँ किन्तु इसकी अनुमति अपने बड़े भाई से जो वास्तव में शासक है, से लेना अनिवार्य है। अतः उनके आने तक आप कार्यवाही न करें। पृथ्वीराज ने इस पर विश्वास किया और इसका लाभ उठाते हुए गौरी ने योजनानुसार प्रातःकाल में ही अचानक व भयानक आक्रमण करके पृथ्वी राज को चक्कर में डाल दिया जिससे राजपूत पराजित हुए।

5- **सुरक्षा (Security) :-** युद्ध के आरम्भ होने से पूर्व तथा युद्ध के दौरान शत्रु द्वारा सम्भावित किसी भी अप्रत्याशित कार्यवाही का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए अपने आप को सुरक्षित रखते हुए शक्तिशाली बना लेना ही सुरक्षा है। वस्तुतः सुरक्षा का सिद्धान्त अपनी सैन्य शक्ति को सन्तुलित बनाए रखने के लिए उपाय बताता है, इसीलिए सुरक्षा को यौद्धिक कार्यवाही की सफलता की नीव कहा जाता है। सुरक्षा के सफलतम उपयोग हेतु सेना नायक को सतर्क एवं दूरदर्शी होना आवश्यक है। उसे इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि जो पहले सचेत हो गया वही पहले तैयार हो गया और इसलिए उसे हर सम्भव उपाय से अपनी स्थिति, संख्या, इरादा और योजना आदि की जानकारी शत्रु को नहीं होना चाहिए। अपनी सुरक्षात्मक टुकड़ियों को महत्वपूर्ण चीजों जैसे - आधार, संरक्षण मार्ग आदि की सुरक्षा हेतु नियोजित कर कमाण्डर को इस बात का प्रयास करना चाहिए कि उसकी सेना का मनोबल उच्च बना रहे और शत्रु द्वारा उसे आश्चर्य चकित करने, सेना की गति में अवरोध डालने के प्रयास सफल न हो पाये। दूसरे शब्दों में किसी भी सेनानायक को समुचित सुरक्षा प्राप्त करने के लिए समस्त सम्भावित खतरों का अनुमान लगाकर उनके निवारण के लिए व्यवस्था कर लेनी चाहिए। जैसा कि 'नेपोलियन' का कथन है कि - "मैं सभी सम्भावित खतरों की कल्पना करके भविष्य की सभी कठिनाइयों को देखने का प्रयत्न करता हूँ।"

सुरक्षा के प्रकार :- युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए तीन चीजों की सुरक्षा आवश्यक है -

(1) **सैनिक एवं सामग्री की सुरक्षा :-** अपने सैनिकों की सुरक्षा हेतु ऐसी सामरिक संरचना अपनानी चाहिए ताकि शत्रु के फायर का घातक प्रभाव कम से कम हो जाय। बिखर कर चलना उस दृष्टि से अधिक लाभदायक हो सकता है। आकार गोपन की विधि का समुचित प्रयोग सैनिक एवं सामग्री दोनों को यथा सम्भव सुरक्षित रख सकता है।

(2) **योजनाओं की सुरक्षा :-** अपनी समस्त योजनाओं को शत्रु से छिपाने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए क्योंकि यदि शत्रु ने हमारी योजनाओं का पता लगा लिया तो वे पूर्ण होने से पूर्व ही निष्फल हो जाएगी और शत्रु द्वारा हमें आश्चर्य चकित करना सरल हो जाएगा। लगातार देखभाल एवं गस्त आदि लगाकर शत्रु की हरकतों पर नियंत्रण रखा जा सकता है।

(3) **मनोबल की सुरक्षा :-** उपर्युक्त सुरक्षा के साथ-साथ सेना के मनोबल की सुरक्षा भी आज के मनोवैज्ञानिक युद्ध में अतिआवश्यक है। क्योंकि शत्रु हर सम्भव उपाय से हमें आश्चर्य चकित कर हमारी और हमारी सेना का मनोवैज्ञानिक विघटन करना चाहता है ताकि हम लड़ने की सामर्थ्य खो बैठें और बिना लड़े ही उसके समक्ष आत्मसमर्पण कर दे।

इस सिद्धान्त को निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है -

उदाहरण-(1) झेलम के संग्राम में सुरक्षा के सिद्धान्तों का पालन करते हुए सावधानी पूर्वक सिकन्दर ने झेलम नदी को पार किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सिकन्दर की विजय और पोरस की पराजय हुई।

(2) 1962 के भारत चीन युद्ध में भारत ने सुरक्षा सिद्धान्तों का पालन नहीं किया, जो उसकी

पराजय का कारण सिद्ध हुआ।

(3) 1965 के भारत-पाक युद्ध में भारत पर पाकिस्तान की प्रारम्भिक हवाई हमलों की कार्यवाही असफल सिद्ध हुई। क्योंकि भारतीयों को पाकिस्तान के इस आक्रमण का आभास था, जिससे उन्होंने अपने वायुयानों को पाकिस्तानी हमले के पूर्व ही सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया था।

(6) **संकेन्द्रण** (Concentration of Force) नेपोलियन का कहना है कि-"युद्ध कला को एक ही सिद्धान्त में अवतरित किया जा सकता है, वह है शत्रु की अपेक्षा अधिक संख्या में एक स्थान पर सामूहिक रूप से सेनाओं को एकत्र कर देना।"

युद्ध के सिद्धान्तों में संकेन्द्रण के सिद्धान्त का बहुत महत्व है। यह सिद्धान्त शक्ति के उचित संतुलन की ओर इंगित करता है। 'नेपोलियन' को इस सिद्धान्त के जनक के रूप में जाना जाता है। इससे पहले भी इस सिद्धान्त का पालन युद्ध में होता था किन्तु नेपोलियन ने सर्वप्रथम इस सिद्धान्त को महत्व दिया। इसे स्पष्ट करते हुए जनरल क्लाज विट्ज ने लिखा है कि -"सेनाओं को केन्द्रित रखने के अतिरिक्त कुछ योजना की अन्य कोई महत्वपूर्ण सिद्धान्त नहीं है।"

इस सिद्धान्त का अर्थ यह होता है कि युद्ध में किसी निश्चित स्थान और समय पर अपनी सेना को इस प्रकार एकत्रित किया जाय, जिससे कि शत्रु सेना की अपेक्षा वहाँ अपनी शक्ति अधिक हो जाय। यह कार्य तभी किया जा सकता है जबकि अन्य स्थानों पर तैनात सेनाओं में मितव्यता अपनायी जाय। इस सिद्धान्त का अर्थ यह कदापि नहीं होता है कि अपनी समस्त ताकत को एक ही स्थान तथा समय पर एकत्र किया जाय और बाकी सीमा सेनारहित होजाय। बल्कि इसका तात्पर्य यह होता है कि दिये हुए स्थान तथा समय पर दुश्मन की अपेक्षा अधिक शक्ति एकत्रित कर ली जाय तथा इसके साथ-साथ अन्य स्थानों पर भी दुश्मन की सेना का मुकाबला करने के लिए सेना का होना जरूरी है। इस सिद्धान्त से सफलता तभी कोई प्राप्त कर सकता है जब दिये हुए स्थान पर अपनी सेना का केन्द्रीकरण कर लिया जाय। साथ ही साथ दुश्मन को ऐसा करने से रोक दिया जाय। 'लिडिल हार्ट' ने कहा है कि-"केन्द्रीकरण फैलाव से ही हो सकता है।" संकेन्द्रण तथा शक्ति की मितव्यता के सिद्धान्त, जिन्हे एक दूसरे का सहयोगी एवं पूरक कहा जा सकता है, का स्थान आधुनिक सैनिक विचारधारा में महत्वपूर्ण है। अमेरिका के सरकारी प्रकाशन में इन सिद्धान्तों के महत्व को बतलाया गया है। उचित स्थान और उचित अवसर पर अपेक्षाकृत अधिक सेनाओं का थल और नभ में संकेन्द्रण तथा उसका निर्णायक दिशा में प्रयोग करने से युद्ध में विजय के लिए उपयुक्त परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। यह संकेन्द्रण तभी सम्भव हो सकता है जब गौण उद्देश्यों के लिए लगाई गयी सेनाओं से मितव्यता का सिद्धान्त प्रयोग किया जाय। इस सिद्धान्त को निम्नलिखित बातों या उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है -

उदाहरण :- युद्ध के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहाँ विजय हेतु केन्द्रीकरण के सिद्धान्तों को अपनाया गया है।

(1) झेलम के संग्राम में सिकन्दर द्वारा अपनी सेना को तीन भागों में विभाजित करना तथा उचित समय पर तीनो भागों को एक जगह केन्द्रीकरण होना, पोरस की पराजय का एक कारण है।

(2) भारत-चीन युद्ध में भारतीय असफलता के उन कारणों में से एक कारण शत्रु के मुकाबले हम किसी भी क्षेत्र में श्रेष्ठता नहीं प्राप्त कर सके और न ही शत्रु के विकेन्द्रीकरण को कमजोर करने अथवा चीनी सेनाओं को विकीर्ण करने की हमने कोई योजना बनाई।

(3) 1971 में भारत-पाक युद्ध में पूर्वी मोर्चे पर भारतीय जनरलों ने कई दिशाओं से आक्रमण कर शत्रु को विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेना फैलाने के लिए विवश कर दिया और केन्द्रीकरण के सिद्धान्त